PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Business Bhaskar, Faridabad
Sunday 13th April 2014, Page: 8
Width: 25.30 cms, Height: 31.03 cms, a3, Ref: pmin.2014-04-13.55.22

THE RISING SUN

एक चोखे सौदे ने सन फार्मा को मुल्क की सबसे बड़ी दवा कंपनी बना दिया। **रैनबैक्सी को अपने नाम करने के बाद अब सन फार्मा वैश्विक स्तर पर धाक जमाने की तैयारी में है...**

•महेंद्र सिंह -नई दिल्ली

सन फार्मा के लिए रैनबैक्सी मुनाफे की गोली साबित होगी। रैनबैक्सी को खरीदने के बाद सन फार्मा को नए बाजारों में उतरने का मौका मिलने के साथ प्रोडक्ट पोर्टफोलियो बढ़ाने का फायदा मिलेगा। दरअसल, सन फार्मा और रैनबैक्सी भारतीय बाजार के अलग-अलग सेगमेंट्स में कारोबार कर रही है। वहीं, उभरते हुए बाजारों की बात करें तो मलेशिया में रैनबैक्सी की स्थिति मजबूत है, जबकि सनफार्मा की मौजूदगी न के बराबर। सही मायने में रैनबैक्सी डील सन के लिए प्रॉफिट का प्रकाश लेकर आएगी...

उभरते बाजारों में मजबूत रैनबैक्सी

सन फार्मा के सीनियर वाइस प्रेसीडेंट उदय बलदोटा ने बिजनेस भास्कर को बताया, अमेरिकी दवा नियामक यूएसएफडीए की तरफ से लगाई गई पाबंदियों की वजह से अमेरिका में रैनबैक्सी के कारोबार को झटका लगा है। उभरते हुए बाजारों में कंपनी का कारोबार लगातार मजबूत हुआ है। बलदोटा के मुताबिक, रैनबैक्सी के चार प्लांटों को लेकर यूएसएफडीए की कार्रवाई 2008 से शुरू हुई। लेकिन आप रैनबैक्सी की पिछले चार सालों की बैलेंस शीट देखें तो पता चलता है कि कंपनी की बिक्री स्टेबल रही है।

दिसंबर तक पूरी होगी डील

सन फार्मा का मानना है कि अमेरिकी बाजार में कंपनी की खुद की उपस्थिति बेहद मजबूत है। उभरते बाजारों में रैनबैक्सी मजबूती के साथ मौजूद है। ऐसे में सन फार्मा को इन बाजारों में कारोबार बढ़ाने में काफी मदद मिलेगी। बलदोटा का कहना है कि रैनबैक्सी के साथ एग्रीमेंट साइन करने के बाद भारत सहित कई देशों में नियामकीय मंजूरी लेने और जरूरी प्रक्रिया पूरी करने में तकरीबन 9 महीने का समय लगेगा। रैनबैक्सी और सन फार्मा की डील दिसंबर 2014 तक पूरी होगी।

भारतीय बाजार में बढ़ेगी पकड़

सन फार्मा भारत में क्रोनिक थैरेपी सेगमेंट में कारोबार कर रही है। रैनबैक्सी एक्यूट क्रोनिक थैरेपी सेगमेंट में मौजूद है। रैनबैक्सी की भारत में ओवर द काउंटर (ओटीसी) सेगमेंट में भी मजबूत उपस्थिति है। बलदोटा के मुताबिक, भारतीय दवा बाजार में सन फार्मा की हिस्सेदारी तकरीबन 5 फीसदी है। रैनबैक्सी के साथ डील पूरी होने के बाद यह हिस्सेदारी 9 फीसदी हो जाएगी।

सस्ता सौदा

सौदे में रैनबैक्सी का वैल्यूएशन बिक्री के 2.22 गुना लगाया गया। बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारतीय कंपनियों को खरीदने के लिए आक्रामक रणनीति पर काम कर रही हैं। इन कंपनियों का इरादा जेनेरिक दवा सेगमेंट और मार्केट में मजबूत पकड़ हासिल करना है। विश्लेषकों के मुताबिक 2008 में रैनबैक्सी-दायची सौदा बिक्री के लगभग चार गुना वैल्यूएशन पर हुआ था। सनोफी-सांथो डील सेल्स के 8 आठ गुना वैल्यूएशन पर हुई थी। वहीं, एबॉट ने पिरामल को 2010 की बिक्री के 9 गुना वैल्यूएशन पर खरीदा था।

घरेलू बाजार पर हुकूमत

सन फार्मा एक झटके में देश की सबसे बड़ी फार्मा कंपनी बन गई। मार्च 2013 के अंत में सन फार्मा का कंसॉलिडेटेड टर्नओवर 11,326.32 करोड़ रुपये था। सन फार्मा को इस टर्नओवर को हासिल करने में 30 साल लगे। पिछले वित्त वर्ष रैनबैक्सी का टर्नओवर 12,410.43 करोड़ रुपये रहा।

दुनिया में भी धाक

डील पूरी होने के बाद दोनों कंपनियों की कुल सालाना बिक्री 4.2 अरब डॉलर होने की उम्मीद है। डील पूरी होने के बाद सन फार्मा दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी जेनरिक दवा कंपनी बन जाएगी। घरेलू बाजार में दोनों कंपनियों की कुल बिक्री करीब 1.1 अरब डॉलर हो सकती है।

1500 करोड़ रुपये के एक्सक्लूसिव प्रोडक्ट्स होंगे रैनबैक्सी के 2015 तक यूएस जेनेरिक मार्केट में

05 फीसदी घरेलू बाजार हिस्सेदारी है अभी सन फार्मा की

1983 में शुरू हुई थी सन फार्मा

28 साल लगे 1 अरब डॉलर की कंपनी बनने में सन फार्मा को

19,000 करोड़ रुपये में सन की हुई रैनबैक्सी

2014 के अंत तक पूरा होगा सौदा

09 फीसदी हिस्सेदारी हो जाएगी सन फार्मा की भारतीय बाजार में

02 अरब डॉलर का टर्नओवर का टार्गेट पूरा किया 2 साल में

02 गुना हो जाएगा टर्नओवर रैनबैक्सी के अधिग्रहण के बाद

05 वीं बड़ी जेनरिक कंपनी होगी दुनिया की सन फार्मा

Company